International Journal of Arts & Education Research

स्वामी विवेकानंद

स्त्री-शिक्षा द्वारा समाज की उन्नति

डॉ0 इंदु सिंह[1], मीनाक्षी त्यागी*[2]

[1]शोध निर्देशिका, पंचवटी इंस्टीट्यूट ऑफएजूकेशन एण्ड टेक्नोलॉजी परतापुर, मेरठ।

[2]शोधर्थी, श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी, गजरौला।

स्वामी विवेकानंद भारतीय दर्शन के संदर्भ में विस्तार, प्रगति, उन्नति, शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से भविष्य के चतुर्मुखी विकास के प्रणेता थे। उनका हृदय गहन विचारों, प्रमाणों तथा असीम क्षमताओं व तथ्यों से भरा था। वे वेदांत के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु माने जाते हैं। वे स्वतंत्राता, जो नैतिकता से परिपूर्ण हों, के पक्षधर थे। उनका मानना था कि मनुष्य में जो सर्वोपरि है उस विश्वबंधुत्व की भावना का विकास संपूर्ण मानवता के उत्थान से ही संभव है। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदांत दर्शन विश्व में स्वामी विवेकानंद के दर्शन द्वारा ही पहुँचा है। उन्हें बालकपन से ही ईश्वर व उसे प्राप्त करने की इच्छा थी। अपने परिवार के धर्मिक संस्कारों का उन पर गहरा प्रभाव था। स्त्री-शिक्षा के संदर्भ में स्वामी जी ने कहा है कि-

तोड़ो जंजीरें जिनसे जकड़े हैं पर तुम्हारे,

वे सोने की हैं तो क्या कसने में तुमको हारे।

IJAER

*Corresponding Author